बच्चों के लिए प्यारी-प्यारी कविताएं

विद्यारत्न कविताएँ

बच्चों के लिए प्यारी-प्यारी कविताएँ

दिनेश कुमार भूषण

(एम. ए; बी. एड.)

विद्यारत्न ऑफिसियल

https://vidyaratna.com

प्राक्कथन

प्रिय पाठक, यह कविता संग्रह विद्यारत्न ऑफिसियल की निजी संपत्ति है, जिसका सर्वाधिकार विद्यारत्न के पास सुरक्षित है। हम उम्मीद करते है कि आप इस पुस्तक में संकलित कविताओं का आनंद लेंगे। यह कविता संग्रह छोटे बच्चों के लिए है। इन कविताओं को आप कक्षा-कक्ष में गतिविधि के रूप में कर सकते हैं।

Contents

प्राक्कथन 0

आंधी आई, आंधी आई, बच्चों के लिए कविता 2

पंखा चलता सन-सन-सन, बच्चों के लिए कविता 3

मेढक की शादी, कविता 4

'गीदड़ की शादी' बच्चों की कविता 5

'कौन कैसा' बच्चों के लिए कविता 6

'बच्चों की मौज' बाल-कविता 7

'मोटा मोटा हाथी' बाल-गीत 8

हमारे शरीर के अंग

L, E, G आओ जी,	आँख के नीचे, आती नाक	Lip लिप्, लिप् मीन्स होंठ,
सब मिल करके, गाओ जी।	वाह भाई वाह, वाह भाई वाह	मीठी स्माइल करते होंठ
LEG लेग, लेग मीन्स पैर,	E, A, R, मानो न हार	वाह भाई वाह, वाह भाई वाह
पैर से करते, हम सब सैर।	आएगी एक दिन अपनी बहार	A, R, M, हममें है दम,
वाह भाई वाह, वाह भाई वाह	EAR, एअर मीन्स कान	करें हम ज्यादा, बोलें कम।
E, Y, E, आओ जी,	काम है सुनना, नाम है कान	Arm आम, आम मीन्स बाजू
सब मिल करके, गाओ जी	वाह भाई वाह, वाह भाई वाह	बाजू कहता खाओ काजू
EYE आई, आई मीन्स आँख,	L, I, P आओ जी,	वाह भाई वाह, वाह भाई वाह।
काम देखना, नाम है आँख	सब मिल करके गाओ जी	

आंधी आई, आंधी आई, बच्चों के लिए कविता

पके आम का सीजन आया, सब बच्चों का मन हर्षाया।

आंधी आई, तूफा आया, बच्चों ने तब दौड़ लगाया।

झट से पहुँचे बगिया में, लोवर, बंडी, जांघिया में।

सब बच्चे चिल्लाए हैं, बाग में दौड़े आये हैं।

सर सर सर हवा चली है, साथ मे उसके धूल उड़ी है।

पेड़ खूब लहराए है, लगता जैसे अभुआएँ हैं।

तड़ तड़ा तड़ गिरते आम, हुआ अंधेरा हो गई शाम।

छीना-झपटी चालू है, सबसे फुर्तीला लालू है।

इधर खट्ट से उधर खट्ट से, समझ न आये किधर खट्ट से।

लीला के सिर पर गिर गया आम, हो गया उसका काम तमाम।

पकड़ के बैठी सिर को अपने, आम वाम सब हो गए सपने।

बड़े जोर की आंधी है, बच्चों की तो चांदी है।

जरा संभल के बीनो आम, टूटी डाल तो हो गया काम।

झगड़ा टंटा कभी करना, मिल जुल कर सबसे तुम रहना।

कुछ आम, कुछ बेल लिए है, जामुन, कटहल, ढ़ेल लिए हैं।

सबका थैला भारी है, खुश अब हर नर-नारी है।

बच्चों के न थैला है, पन्नी, बंडी ही थैला है।

कपड़ों में लग गया दाग है, बच्चों का ये अहो-भाग्य है।

मैं इतना, तू कितना पाया, लालू तो झोला भर लाया।

अब तो छककर खाएंगे, खूब मौज मनाएंगे।

पके आम का सीजन आया, सब बच्चों का मन हर्षाया।

आंधी आई, तूफा आया, बच्चों ने तब दौड़ लगाया।

झट से पहुँचे बगिया में, लोवर, बंडी, जांघिया में।

सब बच्चे चिल्लाए हैं, लौट के घर को आये हैं।

पंखा चलता सन-सन-सन, बच्चों के लिए कविता

पंखा चलता सन-सन-सन
मन करता है फन-फन-फन
आई गर्मी पंखा लाओ,
बिजली देकर इसे चलाओ।
इसके नीचे तुम सो जाओ
तो गर्मी को मार भगाओ
पंखा सबको हवा है देता
गर्मी की है दवा ये देता
पंखा चलता सन-सन-सन
मन करता है फन-फन-फन

पंखा सर-सर चलता है
मुन्नू घर्र-घर्र सोता है।
दोस्त है इसकी बिजली रानी
बिजली है करती मनमानी
क्षण में आती क्षण में जाती
बिजली सबके मन को भाती
जब बिजली चली जाती है
गर्मी बहुत सताती है।
पंखा भी सो जाता है
आते बिजली जग जाता है।
पंखा चलता सन-सन-सन

मेढक की शादी

मेढक की शादी, कविता

उमड़ घुमड़ के बादल बरसे, बिजली चमके मेघा गरजे।

झम झमाझम पानी बरसे, मेढक निकले अपने घर से।

मेढक की अब सभा लगी है, जीवन की अब आश जगी है।

टर टर टर टर मेढ़क बोलें, बड़े राज की बात हैं खोलें।

बड़के मेढक की है शादी, सबने मिल आवाज लगा दी।

बने बाराती सारे मेढक, जमके मौज उड़ाए हैं।

मछली, कछुआ, जोंक सभी अब, बने बाराती आएं हैं

टर्र टर्र करे मेढक जी, मेढकिया संग लाएं हैं।

उनकी दुल्हन बहुत है सुंदर, मन ही मन हरषाए हैं।

मछली, कछुआ, जोंक सभी अब, बने बाराती आएं हैं

बने बाराती सारे मेढक, जमके मौज उड़ाए हैं।

कमल कमुदनी जलकुम्भी भी, मेढक को आशीष दिए।

रहे सलामत जोड़ी इनकी, मिल दोनों सौ साल जिए।

इतने मेढक देख के बच्चे, बहुत अधिक हरषाए हैं।

टर्र टर्र करे मेढक जी, मेढकिया संग लाएं हैं।

दूल्हा दुल्हन के स्वागत में, सब निकले है अपने घर से।

उमड़ घुमड़ के बादल बरसे, बिजली चमके मेघा गरजे।

रिमझिम रिमझिम पानी बरसे, मेढक निकले अपने घर से।

'गीदड़ की शादी' बच्चों की कविता

उमड़े बादल, घुमड़े बादल,

तेज हवा संग, उमड़े बादल।

कभी इधर को, कभी उधर को,

मनमस्ती में घुमड़े बादल।

उमड़ घुमड़ के बरसे बादल,

तड़के बादल, गरजे बादल,

जी भरके हैं, बरसे बादल।

रामू देखो श्यामू देखो,

चिंकी देखो मिंकी देखो,

मिल सबके या मैजिक देखो।

बिजली चमकी, बादल गरजा,

बारिश के संग, धूप है चमका।

दादी कहती, नानी कहती,

जब बारिश संग धूप है रहती।

बात है एक, अनूठी होती,

गीदड़ की तब शादी होती।

जब बर्षा संग धूप है होती

तब गीदड़ की शादी होती।

बाबू देखो, मुन्नी देखो,

साथ में बर्षा धूप को देखों।

रिमझिम रिमझिम बारिश आई,

'कौन कैसा' बच्चों के लिए कविता

पतला कौन है, कौन है मोटा, बड़ा कौन है, कौन है छोटा, लम्बा कौन, कौन है नाटा हाथ है पतला, पैर है मोटा मुँह है बड़ा, दाँत है छोटा उंगली लम्बी, अँगूठा नाटा। अब हम गए हैं जान सब जाते पहचान गोलू आओ, भोलू आओ मेरे साथ, सब सब मिल गाओ।	पतला कौन है, कौन है मोटा, बड़ा कौन है, कौन है छोटा, लम्बा कौन, कौन है नाटा लौकी पतली, कद्दू मोटा, गोभी बड़ी, टमाटर छोटा मूली लम्बी, चुकंदर नाटा अब हम गए हैं जान सब जाते पहचान गोलू आओ, भोलू आओ मेरे साथ, सब सब मिल गाओ। पतला कौन है, कौन है मोटा, बड़ा कौन है, कौन है छोटा, लम्बा कौन, कौन है नाटा

दिनेश कुमार भूषण

'बच्चों की मौज' बाल-कविता

जस्सी आया रस्सी लाया,

जावेद आया गेंद लाया,

सारा आई गुब्बारा लाई,

अमन आया चमन भी आया

साथ मे उनके गगन भी आया

सभी साथ मे आये हैं,

हलवा पूरी लाये हैं

फिर सब मिलकर खाएंगे।

खूब मौज मनाएंगे।

ममता आई छाता लाई,

सविता आई कविता आई,

अर्पण आया दर्पण लाया,

मयंक आया पतंग लाया,

चाचा आये खाजा लाये,

मामी आयी टॉफी लाई,

रोली आई टोली लाई,

भैया-भाभी आये हैं,

संग में मिठाई लाये हैं,

हम सब मिलकर खाएंगे।

खूब मौज मनाएंगे।

दिनेश कुमार भूषण

मोटा-मोटा हाथी

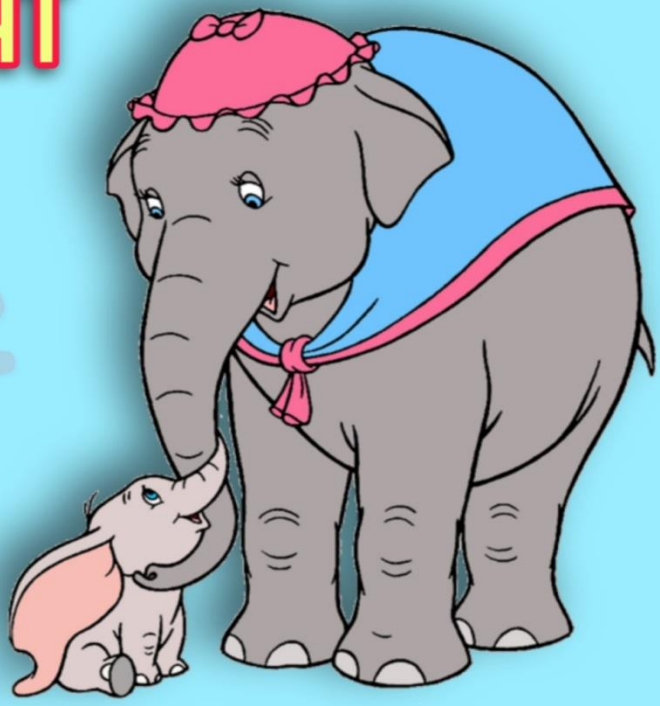

'मोटा मोटा हाथी' बाल-गीत

मोटा मोटा हाथी,
हाथी मेरा साथी,
पैर है मोटे आंखें छोटी,
बड़े कान हैं चमड़ी मोटी,
सूंड है लम्बी आंखे छोटी,
बड़ा पेट है पूंछ है छोटी,
पीठ पर इसके काठी,
हाथी मेरा साथी,
मोटा मोटा हाथी।

सूंड में इसके पानी आता,
गन्ना, पत्ती, डाल है खाता,
इसका चाल सभी को भाता,
जब हाथी मेरे घर आता,
हम तो इसके दोस्त रहेंगे,
यही बात हम सब से कहेंगे,
साथी मेरा साथी,
मोटा मोटा हाथी।

दिनेश कुमार भूषण